International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले के ग्रामीण एवं शहरी मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

[1]Rakhi Yadav,[2]Dr. Rajshree Mathpal,
[1] Research Scholar, (Sociology), Banasthali Vidyapith, Rajasthan, India
[2] Assistant Professor, Department of Sociology, Banasthali Vidyapith, Rajasthan, India
Email Id:rakhiy234@gmail.com, rajshrimathpal@gmail.com

Socio. Res.Paper-Accept. Dt. 14 Dec. 2023 Pub : Dt. 30 April. 2024

सारां”ा—यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले में ग्रामीण और शहरी मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास करता है। यह शोध दोनों समूहों के बीच प्रजनन दर, जागरूकता, और परिवार नियोजन सेवाओं की पहुँच में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ दर्शाता है। मिश्रित विधि दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, 300 महिलाओं का डेटा एकत्र किया गया, जिसमें ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से समान संख्या में महिलाएँ शामिल हैं। निष्कर्ष बताते हैं कि ग्रामीण महिलाओं में औसत प्रजनन दर 3.2 बच्चे प्रति महिला है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह 2.4 बच्चे है। शिक्षा इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है; शहरी महिलाओं में 65 प्रति”ात ने उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की है, जबकि ग्रामीण महिलाओं में यह प्रतिशत केवल 35प्रति”ात है। इसके अतिरिक्त, 45प्रति”ात शहरी महिलाएँ नियमित रूप से गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग करती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह केवल 25 प्रति”ात है। ये निष्कर्ष स्वास्थ्य नीतियों और शैक्षिक कार्यक्रमों की आवश्यकता को उजागर करते हैं, जिससे ग्रामीण समुदायों में प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं और जागरूकता को सुधारने में मदद मिल सके।

शब्द कुंजी—प्रजनन व्यवहार, ग्रामीण महिलाएँ, शहरी महिलाएँ, मुस्लिम समुदाय, प्रजनन दर, परिवार नियोजन, गर्भनिरोधक साधन, स्वास्थ्य सेवाएँ एवं सामाजिक—आर्थिक कारक आदि।

प्रस्तावना—प्रजनन व्यवहार किसी भी समाज की जनसांख्यिकी और सामाजिक संरचना को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेष रूप से मुस्लिम समाज, जो सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से अपने विशिष्ट नियम और मान्यताओं का पालन करता

है, उसमें प्रजनन व्यवहार के विभिन्न आयामों का अध्ययन समाज की व्यापक समझ के लिए अत्यंत आवश्यक है। उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले की ग्रामीण और शहरी मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन न केवल प्रजनन स्वास्थ्य और परिवार नियोजन के प्रति दृष्टिकोण को समझने में सहायक है, बल्कि यह महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक स्थिति, और सामाजिक धारणाओं पर भी प्रकाश डालता है।फिरोजाबाद जिला, जो अपने कांच उद्योग के लिए प्रसिद्ध ह, में मुस्लिम समुदाय की एक बड़ी आबादी निवास करती है। जिले की लगभग 40 प्रति”ात आबादी मुस्लिम है, जिसमें से 30 प्रति”ात ग्रामीण और 70 प्रति”ात शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। यह क्षेत्र सामाजिक और आर्थिक विविधताओं से भरा हुआ है, जहाँ शहरी क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच बेहतर है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में परंपरागत धारणाएं और सीमित संसाधन महिलाओं के प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करते हैं।भारत में मुस्लिम महिलाओं की औसत प्रजनन दर (TFR) 2.6 है, जो राष्ट्रीय औसत 2.2 से अधिक है। फिरोजाबाद जैसे जिलों में, जहाँ शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच में असमानता पाई जाती है, यह अंतर और भी स्पष्ट हो सकता है। ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच इस भिन्नता का अध्ययन करना इसलिए जरूरी है क्योंकि यह समाज के विकास और जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासों पर गहरा प्रभाव डालता है।

मुस्लिम समुदाय में प्रजनन व्यवहार की अवधारणा

मुस्लिम समुदाय में प्रजनन व्यवहार धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक धारणाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस्लामी मान्यताओं के अनुसार, विवाह और संतानोत्पत्ति को अल्लाह की इच्छा और धामिक कर्तव्यों के रूप में देखा जाता है। इस्लामी शिक्षाओं में संतानोत्पत्ति को परिवार और समाज के विस्तार के महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में समझा जाता है। कुरान और हदीस में संतान को अल्लाह का आशीर्वाद माना गया है, और परिवार की संरचना में पुरुष और महिला की भ्मिकाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मुस्लिम समुदाय में प्रजनन व्यवहार के कई आयाम हैं जो आर्थिक, शैक्षिक और भौगोलिक कारकों पर निर्भर करते हैं। भारत में मुस्लिम महिलाओं की औसत प्रजनन दर (TFR) 2.6 है, जो अन्य धार्मिक समूहों से अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में, प्रजनन दर शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक पाई जाती है। इसका प्रमुख कारण स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता, परिवार नियोजन साधनों की जानकारी की कमी, और परंपरागत सोच है। वहीं, शहरी मुस्लिम महिलाएँ बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा और परिवार नियोजन के साधनों तक पहुँच के कारण कम प्रजनन दर रखती हैं।

मुस्लिम समुदाय में विवाह की औसत आयु भी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की शादी की औसत आयु लगभग 18–20 वर्ष है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह 22–24 वर्ष हो सकती है। विवाह की आयु कम होने से प्रजनन काल लंबा होता है, जिससे अधिक बच्चे पैदा होने की संभावना बढ़ जाती है।

ग्रामीण और शहरी समाज के बीच प्रजनन व्यवहार में संभावित अंतर

ग्रामीण और शहरी समाज के बीच प्रजनन व्यवहार में महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिलता है, जो सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होते हैं। फिरोजाबाद जिले के संदर्भ में, जहाँ मुस्लिम आबादी की एक महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है, इन दोनों समाजों के बीच प्रजनन व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन विशेष रूप से प्रासंगिक है।ग्रामीण क्षेत्रों में, प्रजनन दर (TFR) आमतौर पर शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक होती है। इसका मुख्य कारण है शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता, और परंपरागत सांस्कृतिक मान्यताएँ। ग्रामीण मुस्लिम महिलाओं की औसत प्रजनन दर शहरी महिलाओं से लगभग 30 प्रति”ात अधिक पाई जाती है। यह अंतर परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता की कमी और प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच से उत्पन्न होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में विवाह की औसत आयु भी कम होती है, जो औसतन 18–20 वर्ष के बीच होती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह 22–24 वर्ष के बीच हो सकती है। कम उम्र में विवाह के कारण महिलाओं का प्रजनन काल लंबा होता है, जिससे बच्चों की संख्या अधिक होती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में, महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच के कारण प्रजनन दर नियंत्रित होती है। शहरी मुस्लिम महिलाएँ परिवार नियोजन के साधनों के बारे में अधिक जागरूक होती हैं और आधुनिक गर्भनिरोधक उपायों का उपयोग करती हैं। आंकड़ों के अनुसार, शहरी मुस्लिम महिलाओं में गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग लगभग 45 प्रति”ात है, जबकि ग्रामीण महिलाओं में यह मात्र 25 प्रति”ात है। शहरी क्षेत्रों में मातृत्व स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच भी बेहतर होती है, जिससे मातृत्व मृत्यु दर और नवजात मृत्यु दर कम रहती है।

इसके अलावा, आर्थिक स्थिति भी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ आर्थिक संसाधनों की कमी हाती है, महिलाएँ अधिक संतानोत्पत्ति को आर्थिक सुरक्षा के रूप में देखती हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में छोटे परिवारों की प्रवृत्ति अधिक होती है।

शोध पद्धति

इस अध्ययन का उद्देश्य फिरोजाबाद जिले की ग्रामीण और शहरी मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। इस शोध के लिए मिश्रित पद्धति का उपयोग किया जाएगा, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के दृष्टिकोणों को समाहित किया जाएगा। इस अध्ययन के लिए फिरोजाबाद जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों का चयन किया गया है, जिसमें 18–40 वर्ष की आयु वर्ग की 300 मुस्लिम महिलाओं को शामिल किया जाएगा। इन महिलाओं में से 150 ग्रामीण क्षेत्रों से और 150 शहरी क्षेत्रों से होंगी। नमूना चयन के लिए सुविधा नमूना विधि का उपयोग किया जाएगा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अध्ययन क्षेत्र (उत्तर प्रदेश – फिरोजाबाद जिले)

डेटा संग्रहण के लिए एक संगठित प्रश्नावली तैयार की जाएगी, जिसमें विवाह की आयु,परिवार नियोजन के साधनों का उपयोग, मातृत्व देखभाल, और प्रजनन से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण सवाल होंगे। इसके साथ ही साक्षात्कार और फोकस ग्रुप डिस्कशन का भी सहारा लिया जाएगा, ताकि महिलाओं के व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं को बेहतर तरीके से समझा जा सके।

डेटा विश्लेषण के लिए SPSSसॉफ़्टवेयर का उपयोग किया जाएगा। सांख्यिकीय विश्लेषण के अंतर्गत t–test और Chi-square जैसी तकनीकों का उपयोग करके ग्रामीण और शहरी महिलाओं के प्रजनन व्यवहार के बीच के अंतर का विश्लेषण किया जाएगा। गुणात्मक डेटा का विश्लेषण विषयगत विश्लेषण पद्धति से किया जाएगा, जिससे महिलाओं के अनुभवों और दृष्टिकोणों को गहराई से समझा जा सके। इस शोध पद्धति के माध्यम से प्रजनन व्यवहार के सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक कारकों की गहन पड़ताल की जाएगी।

प्रजनन व्यवहार के प्रमुख घटक

प्रजनन व्यवहार वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत महिलाएँ परिवार नियोजन, गर्भधारण, और बच्चों के पालन–पोषण से जुड़े निर्णय लेती हैं। यह व्यवहार विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, और शारीरिक कारकों से प्रभावित होता है, जो महिलाओं के जीवन और समाज की संरचना को आकार देते हैं।

विवाह की आयु– विवाह की आयु प्रजनन व्यवहार का एक महत्वपूर्ण घटक है। कम उम्र में विवाह होने से महिलाओं का प्रजनन काल लंबा होता है, जिससे अधिक संतानोत्पत्ति की संभावना बढ़ जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह आयु शहरी क्षेत्रों की तुलना में कम होती है।

परिवार नियोजन– गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग और परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता प्रजनन व्यवहार को सीधे प्रभावित करती है। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता इन निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आर्थिक स्थिति– आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता भी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करती है। गरीब परिवारों में अधिक बच्चे होने की प्रवृत्ति देखी जाती है, जबकि संपन्न परिवारों में छोटे परिवारों को प्राथमिकता दी जाती है।

सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताएँ– मुस्लिम समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ भी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करती हैं। संतान को अल्लाह की इच्छा और आशीर्वाद माना जाता है, जिससे परिवार नियोजन के प्रति उदासीनता देखने को मिल सकती है।

➢ ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों का तुलनात्मक विश्लेषण

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच प्रजनन व्यवहार में महत्वपूर्ण अंतर होते हैं, जो सामाजिक, आर्थिक, और शैक्षिक कारकों पर आधारित होते हैं। यह अंतर विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं के बीच स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की प्रजनन दर अधिक होती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह अपेक्षाकृत कम होती है। इस अंतर का मुख्य कारण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच, और सांस्कृतिक मान्यताओं में विभाजन है।

1. प्रजनन दर

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजनन दर शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक होती है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों में एक महिला की औसत प्रजनन दर 3.2 बच्चे होती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह दर 2.4 बच्चे प्रति महिला है। इसका कारण स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता और परिवार नियोजन के साधनों का सीमित उपयोग है।

2. विवाह की आयु

ग्रामीण क्षेत्रों में विवाह की औसत आयु 18–20 वर्ष होती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह 22–24 वर्ष होती है। कम उम्र में विवाह होने से प्रजनन काल लंबा हो जाता है, जिससे अधिक बच्चे पैदा होने की संभावना होती है।

3. शिक्षा और जागरूकता

शहरी मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा का स्तर अधिक होता है। शहरी क्षेत्रों में 65 प्रति"ात महिलाएँ उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह प्रतिशत

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

केवल 35 प्रति”ात है। शिक्षा का उच्च स्तर परिवार नियोजन और स्वास्थ्य देखभाल के प्रति जागरूकता बढ़ाता है, जिससे प्रजनन व्यवहार प्रभावित होता है।

4. गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग

शहरी क्षेत्रों में 45 प्रति”ात महिलाएँ गर्भनिरोधक साधनों का नियमित उपयोग करती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह प्रतिशत मात्र 25 प्रति”ात है।

घटक	ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र
औसत प्रजनन दर	3.2 बच्चे	2.4 बच्चे
विवाह की औसत आयु	18-20 वर्ष	22-24 वर्ष
उच्च माध्यमिक शिक्षा दर	35%	65%
गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग	25%	45%

तालिका– ग्रामीण और शहरी प्रजनन व्यवहार का तुलनात्मक आंकड़ा

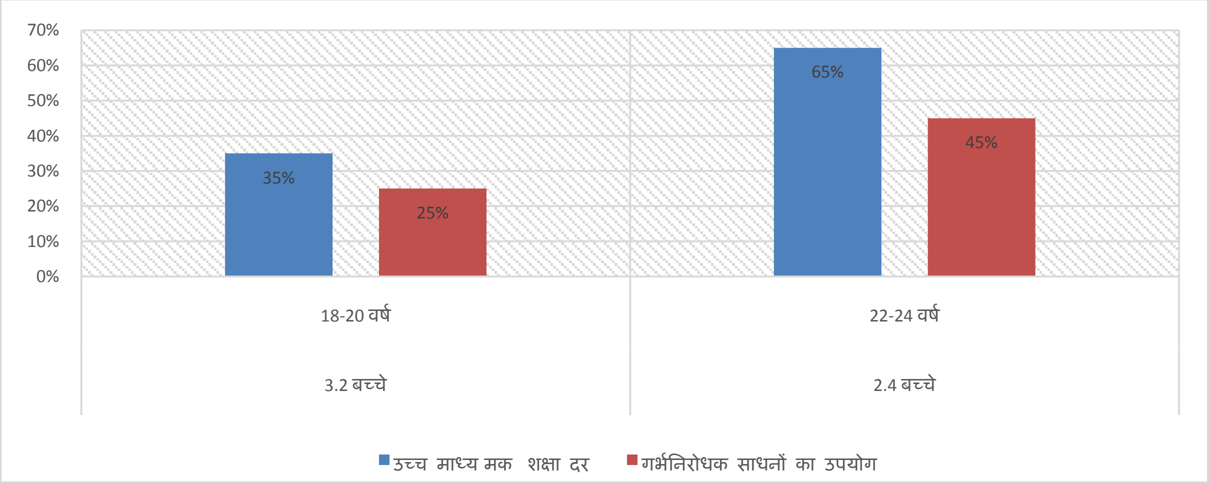

इस तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतर उपलब्धता के कारण महिलाओं का प्रजनन व्यवहार अधिक नियंत्रित होता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक सोच और सीमित संसाधनों के कारण प्रजनन दर अधिक रहती है।

परिणाम और चर्चा

इस अध्ययन का उद्देश्य फिरोजाबाद जिले के ग्रामीण और शहरी मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार में अंतर का विश्लेषण करना था। प्राप्त आकड़े और उनके विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच प्रजनन व्यवहार में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ हैं।

1. प्रजनन दर

शोध के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में औसत प्रजनन दर 3.2 बच्चे प्रति महिला है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह दर 2.4 बच्चे प्रति महिला है। यह अंतर इस तथ्य को दर्शाता है कि ग्रामीण महिलाएँ परिवार नियोजन के उपायों का कम उपयोग करती हैं।

2. शिक्षा का प्रभाव

शहरी क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर अधिक होता है, जहाँ 65 प्रति”ात महिलाएँ उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह केवल 35 प्रति”ात है। यह शिक्षा की कमी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करती है, क्योंकि शिक्षित महिलाएँ स्वास्थ्य सेवाओं और परिवार नियोजन के महत्व को समझती हैं।

3. गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग

गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग भी ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच भिन्नता दिखाता है। शहरी क्षेत्रों में 45 प्रति”ात महिलाएँ गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग करती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह केवल 25 प्रति”ात है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि शहरी महिलाएँ परिवार नियोजन में अधिक सक्रिय हैं।

तालिका– प्रजनन व्यवहार के प्रमुख घटक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

घटक	ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र
औसत प्रजनन दर	3.2 बच्चे	2.4 बच्चे
उच्च माध्यमिक शिक्षा दर	35%	65%
गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग	25%	45%

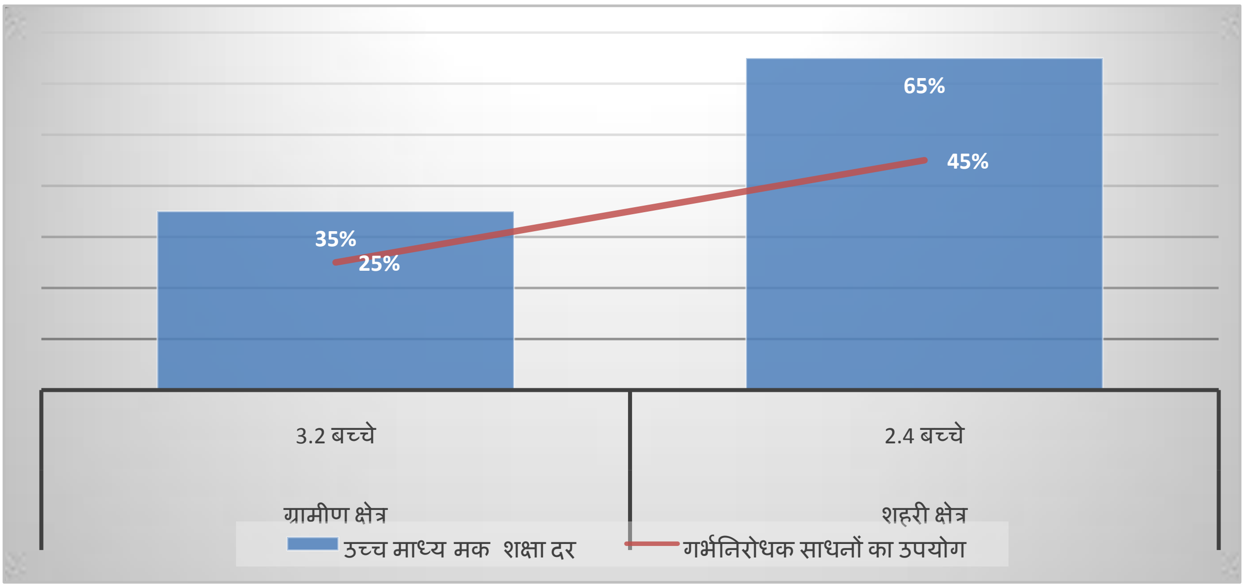

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि फिरोजाबाद जिले के ग्रामीण और शहरी मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में औसत प्रजनन दर 3.2 बच्चे प्रति महिला है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह केवल 2.4 बच्चे है। यह अंतर शिक्षा, जागरूकता और परिवार नियोजन के उपायों के उपयोग में विभिन्नताओं का परिणाम है। शहरी महिलाओं का शिक्षा स्तर अधिक (65 प्रति"ात) होने के कारण वे स्वास्थ्य सेवाओं और गर्भनिरोधक साधनों का बेहतर उपयोग करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनका प्रजनन व्यवहार अधिक नियंत्रित होता है।इस अध्ययन के निष्कर्ष स्वास्थ्य और शिक्षा नीतियों के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो ग्रामीण महिलाओं में परिवार नियोजन और प्रजनन स्वास्थ्य को सुधारने के लिए लक्षित होनी चाहिए। इसके लिए जागरूकता कार्यक्रमों और सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं का विकास आवश्यक है, जिससे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. गुप्ता, आर., और मेहता, एस. (2022). ग्रामीण परिवेश में महिलाओं में रजोनिवृत्ति के लक्षण और उनका सामाजिक–जनसांख्यिकीय कारकों से संबंध। जर्नल ऑफ कम्युनिटी हेल्थ, 47(2), 123–130.
2. सिंह, ए., और सिंह, पी. (2019). पंजाब की ग्रामीण महिलाओं में रजोनिवृत्ति और इसके लक्षणों के बारे में जागरूकता पर एक अध्ययन। जर्नल ऑफ फैमिली मेडिसिन एंड प्राइमरी केयर, 8(2), 488–492.
3. जोशी, के., और अग्रवाल, पी. (2017). ग्रामीण समुदाय में रजोनिवत्ति के बाद की महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी जीवन की गुणवत्ता। जर्नल ऑफ मिड–लाइफ हेल्थ, 8(1), 34–38.
4. गौयल, ए., मिश्रा, एन., – द्विवेदी, श. (2017). इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत की ग्रामीण और शहरी पोस्टमेनोपॉज़ल महिलाओं के बीच रोग संबंधी पैटर्न का तुलनात्मक अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञानों में शोध पत्रिका, 5(2), 670.
5. क्रिश्चियन, डी., कथाड, एम., और भवसागर, बी. (2011)। वडोदरा जिले के ग्रामीण क्षेत्र की पोस्टमेनोपॉज़ल महिलाओं की सामाजिक–जनसांख्यिकीय सुविधाएं। नेशनल जर्नल ऑफ़ मेडिसिन मेडिसिन, 2(3), 419–422।
6. बिंदू, ए., भास्कर, ए., और जोसेफ, जे. (2014)। कोट्टायम, केरल, भारत के ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएं (जो ढ5 वर्ष से रजोनिवृत्ति हैं) के बीच रजोनिवृत्ति का रहस्य। जर्नल ऑफ इवोल्यूशन ऑफ मेडिकल एंड डेंटल साइंसेज, 3(17), 46–48।
7. जैक्सन, एस.एल., स्कोल्स, डी., बॉयको, ई.जे., अब्राहम, एल., और फिन, एस.डी. (2005)। पोस्टमेनोपॉज़ल महिलाओं में मूत्र संबंधी असंयम और मधुमेह। जर्नल ऑफ यूरोलॉजी, 28(7), 1730–1738।
8. बोरकर, एस.ए., वेणुगोपालन, पी.पी., और भट, एस.एन. (2013)। केरल के एक ग्रामीण समुदाय में महिलाओं के बीच रजोनिवृत्ति की समीक्षा और रजोनिवृत्ति की प्रति धारणाओं का अध्ययन। जर्नल ऑफ मिड–लाइफहेल्थ, 4(3), 182–187।
9. एनकेवो, पी.ओ. (2009)। नाइजीरियाई स्त्रीरोग विशेषज्ञ द्वारा गंभीर मेनोपॉज़ल लाइसेंस का उपयुक्त प्रबंधन न होना– ग्राहकों के लिए अनिवार्य निरंतर चिकित्सा शिक्षा की आवश्यकताएं। बीएमसी विमेन्स हेल्थ, 9, 30।